items such as precision ball bearings, oil seals, clutches, electrical relays, which are not yet manufactured in the country and which have to be imported. Similarly raw materials like special alloy steels have to be imported. The Company are making efforts to achieve a high degree of self-sufficiency in the matter of raw materials and components.

(b) No, Sir. To the extent the cost of imported components and raw materials have increased as a result of the devaluation, the Company have to increase prices of their products to maintain profitability at a reasonable level. They have been obliged to make such increases from August 1966.

(c) Does not arise.

Century Flour Mills

2903. Shrimati Renu Chakravartty: Will the Minister of **Industry** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that in the recent collaboration agreement between the Century Flour Mills and the National Biscuit Co., U.S.A. there is no firm export guarantee; and

(b) the reasons for not obtaining clear guarantee in this regard?

The Minister of Industry (Shri D. Sanjivayya): (a) and (b). In the Government's approval accorded to the collaboration arrangement, it has already been stipulated that the Government have noted that M|s. Century Flour Mills Ltd. will export biscuits to the extent of Rs. 20 lakhs in the course of seven years from the commencement of production and that the export of biscuits should cover the outflow of foreign exchange on account of dividends.

Cotton Buffer Stock Association

2904. Dr. M. M. Das:
Shri B. K. Das:
Shri Bhagwat Jha Azad:
Shri M. L. Dwivedi:
Shri S. C. Samanta:
Shri Subodh Hansda:
Shri D. C. Sharma:

Will the Minister of **Commerce** be pleased to state:

(a) whether an agency under the name "Cotton Buffer Stock Association" is going to be set up shortly to impart stability to the price of the Indian cotton;

(b) if so, how the cotton cultivators are going to be benefited by this organisation; and

(c) whether Government propose to set up a similar Organisation for stabilising raw jute price also?

The Minister of Commerce (Shri Manubhai Shah): (a) The proposal to set up a Cotton Buffer Stock Association is not being pursued.

(b) Does not arise.

(c) A Jute Buffer Stock Association, set up by the jute industry, is already in existence from 1962.

कानपुर-बान्दा ब्रांच लाइन पर एक्सप्रैस रेलगाड़ी

2905. श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री स० चं० सामन्त :
डा० म० मो० दास :
श्री प्र० चं० बरुआ :

क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) मध्य प्रदेश रेलवे की कानपुर-बांदा ब्रांच लाइन पर चलने वाली एक्सप्रैस रेलगाड़ी को लखनऊ-बांदा एक्सप्रैस रेलगाड़ी में बदलने के बारे में क्या कठिनाई है;

(ख) क्या इस रेलगाड़ी के दो अथवा तीन अतिरिक्त स्टेशनों पर रुकने

के बारे में मांग प्राप्त हुई है और यदि हां, तो इस बारे में क्या निर्णय किया गया है ; और

(ग) क्या उक्त रेलगाड़ी के आने-जाने के समय यात्रियों के लिये उपयुक्त नहीं है और यदि हां, तो इस रेलगाड़ी के समय को ठीक निश्चित करने के लिये रेलवे प्रशासन को क्या कठिनाई अनुभव हो रही है ?

रेलवे मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : (क) 2.10.1966 से नं० 109 डाउन 110 अप बांदा-कानपुर एक्सप्रेस गाड़ियों का आना-जाना लखनऊ तक बढ़ा दिया गया है।

(ख) इन एक्सप्रेस गाड़ियों को कठारा रोड, भीमसेन और सिरही इतारा स्टेशनों पर ठहराने की मांग को स्वीकार नहीं किया गया है क्योंकि ऐसा करने से गाड़ियों को अधिक जगह रुकना पड़ेगा और इन स्टेशनों के यातायात को देखते हुए ऐसा करने का औचित्य नहीं है। साथ ही, ऐसा करने से इन तेज गाड़ियों की यात्रा में लगने वाला समय बढ़ जायेगा और जिस उद्देश्य को लेकर ये गाड़ियां चलायी गयी हैं, वह पूरा नहीं होगा और उनके एक्सप्रेस गाड़ी कहलाने का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा।

(ग) इन एक्सप्रेस गाड़ियों का आना-जाना लखनऊ तक बढ़ाने के अलावा, एक संसद् सदस्य द्वारा अन्य बातों के साथ-साथ जो मांग की गयी थी, उसके अनुसार इन गाड़ियों के समय में भी 2-10-1966 से समुचित संशोधन कर दिया गया है और कानपुर में यात्रियों के लिए अधिक उपयुक्त मेल की व्यवस्था की गयी है। इस बात का भी ध्यान रखा जा रहा है कि संशोधित समय उपयुक्त है या नहीं और इस सम्बन्ध में जो भी कार्रवाई व्यावहारिक और उचित होगी, की जायेगी।

आयातित वस्तुओं का सरकारी कार्यालयों द्वारा इस्तेमाल

2906. **श्री म० ला० द्विवेदी :**
श्री सुबोध हंसदा :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री प्र० चं० बख्शी :
डा० म० मो० दास :

क्या सम्भरण, तकनीकी विकास तथा सामग्री आयोजन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों तथा विभागों की विभिन्न प्रकार की मांगों को पूरा करने के लिये पिछले एक वर्ष में कितनी मात्रा में तथा कितने मूल्य का सामान तथा अन्य उपकरण आयात किये गये ;

(ख) क्या आयात किये गये उक्त सामान की सूची सभा-पटल पर रखी जाएगी;

(ग) उन मंत्रालयों तथा विभागों के नाम क्या हैं, जो केन्द्रीय सरकार की नीति के विपरीत देश में बनी हुई वस्तुओं की अपेक्षा विदेशी वस्तुओं की सप्लाई का आग्रह करते हैं ; और

(घ) जो सामान सरकारी क्षेत्र में बनाया जाता है, वैसे ही सामान को विदेशों से खरीदने के क्या कारण हैं ?

सम्भरण, तकनीकी विकास तथा सामग्री आयोजना मंत्री (श्री के० रघुरामय्या) : (क) और (ख). सभा-पटल पर एक सूची रखी जाती है (**पुस्तकालय में रखी गई। देखिए संख्या एल० टी०7499/66**) 1965-66 में पूर्ति और निपटान महा निदेशालय तथा लंदन और वाशिंगटन के भारत पूर्ति मिशनों द्वारा आयातित वस्तुओं के लिए किए गए आर्डरों का मूल्य वस्तुओं